SANP NUMA JINN (HIDNI)

म-दनी चेनल देखते रहिये

सांप नुमा जिन्न

और ग़ौसे पाक رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के दीगर वाक़िआत

- बड़ी बड़ी आंखों वाला आदमी 2
- मुसीबत दूर होने का अ़मल 9
- नींद उड़ाने का अ़जीब नुस्ख़ा 15
- क़ादिरिय्यों के लिये बिशारत के बग़दादी फूल 22
- मुर्शिद के 16 हुक़ूक़ 23

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

مکتبۃ المدینہ (دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा ।

दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना

व बक़ीअ़

व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सांप नुमा जिन्न

येह रिसाला **(सांप नुमा जिन्न)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात,

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

﴿1﴾ सांप नुमा जिन्न

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप येह रिसाला (32 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का दिल सीने में झूम उठेगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़तशम**, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी दुआए मग़्फ़िरत) करते रहेंगे।"

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج ۱ ص ۴۹۷ حدیث ۱۸۳۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वलियों के सरदार, शहन्शाहे बग़्दाद, सरकारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم अपने मद्रसे के अन्दर इज्तिमाअ़ में बयान फ़रमा रहे थे कि छत पर से एक **सांप** आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर गिरा। सामिईन में भगदड़ मच गई, हर त़रफ़ ख़ौफ़ो हिरास फैल गया मगर सरकारे बग़्दाद عليهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الجَوَاد अपनी जगह से न हिले। **सांप** आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कपड़ों में घुस गया और तमाम जिस्मे मुबारक से लिपटता हुवा गरीबान

शरीफ़ से बाहर निकला और गरदन मुबारक पर लिपट गया । मगर क़ुरबान जाइये ! मेरे मुर्शिद शहन्शाहे बग़दाद عليهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد पर कि ज़र्रा बराबर न घबराए न ही बयान बन्द किया । अब **सांप** ज़मीन पर आ गया और दुम पर खड़ा हो गया और कुछ कह कर चला गया । लोग जम्अ़ हो गए और अ़र्ज़ करने लगे : हुज़ूर ! **सांप** ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से क्या बात की ? इर्शाद फ़रमाया : **सांप** ने कहा : "मैं ने बहुत सारे **औलियाउल्लाह** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى को आज़माया मगर आप जैसा किसी को नहीं पाया ।" (مُلَخَّص از بَهْجَةُ الْاَسْرار لِلشَّطْنُوفی ص۱۶۸)

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा

ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा वोह कोई आ़म सांप नहीं बल्कि **सांप नुमा जिन्न** था जिस ने हमारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का इम्तिहान लेने की कोशिश की थी और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه साबित क़दम रहे ।

﴾2﴿ बड़ी बड़ी आंखों वाला आदमी

इसी **सांप नुमा जिन्न** की दूसरी[2] ख़ौफ़नाक हिकायत सुनिये और ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इस्तिक़ामत पर अ़क़ीदत से सर धुनिये चुनान्चे हुज़ूर शहन्शाहे बग़दाद सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं जामेए़ मन्सूर में मसरूफ़े नमाज़ था कि वोही **सांप** आ

गया और उस ने मेरे सज्दे की जगह पर सर रख कर मुंह खोल दिया ! मैं ने उसे हटा कर सज्दा किया, मगर वोह मेरी गरदन से लिपट गया फिर वोह मेरी एक आस्तीन में घुस कर दूसरी आस्तीन से निकला, नमाज़ मुकम्मल करने के बा'द जब मैं ने सलाम फैरा तो वोह ग़ाइब हो गया। दूसरे रोज़ जब मैं फिर उसी मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मुझे एक **बड़ी बड़ी आंखों वाला आदमी** नज़र आया मैं ने उसे देख कर अन्दाज़ा लगा लिया कि येह शख़्स इन्सान नहीं बल्कि कोई **जिन्न** है, वोह **जिन्न** मुझ से कहने लगा कि मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को तंग करने वाला वोही **सांप** हूं, मैं ने **सांप** के रूप में बहुत सारे **औलियाउल्लाह** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى को आज़माया है मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जैसा किसी को भी साबित क़दम नहीं पाया, फिर वोह **जिन्न** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दस्ते हक़ परस्त पर ताइब हो गया। (بَهْجَةُ الْاَسْرار ص١٦٩ دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुए देख कर तुझ को काफ़िर मुसल्मां
बने संगदिल मोम सां ग़ौसे आ'ज़म (क़बालए बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे मुर्शिदे कामिल, सरकारे बग़दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد की भी क्या शान है ! आह ! एक हमारी नमाज़ है कि हम पर मक्खी भी बैठ जाए तो परेशान हो जाएं, मा'मूली ख़ारिश भी हम से बरदाश्त न हो सके। इस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि जिन्नात भी हमारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के गुलाम बन जाते हैं।

﴾3﴿ शैत़ान का ख़त़रनाक वार

सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं किसी जंगल की त़रफ़ निकल गया और कई रोज़ तक वहां पड़ा रहा । खाने पीने को कुछ भी न होता था । मुझ पर प्यास का सख़्त ग़-लबा था, ऐसे में मेरे सर पर एक बादल का टुकड़ा नुमूदार हुवा, उस में से कुछ बारिश के क़त़रे गिरे जिन्हें मैं ने पी लिया, इस के बा'द बादल में एक नूरानी सूरत ज़ाहिर हुई जिस से आस्मान के कनारे रोशन हो गए और एक आवाज़ गूंजने लगी : "ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! मैं तेरा रब हूं, मैं ने तमाम ह़राम चीज़ें तेरे लिये ह़लाल कर दीं ।" मैं ने اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़ा, एक दम रोशनी ख़त्म हो गई और उस ने धूएं का रूप धार लिया और आवाज़ आई : "ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! इस से क़ब्ल मैं सत्तर[70] औलिया को गुमराह कर चुका हूं मगर तुझे तेरे इ़ल्म ने बचा लिया ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने कहा : ऐ मरदूद ! मुझे मेरे इ़ल्म ने नहीं बल्कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल ने बचा लिया । (ऐज़न, स. 228)

हूं ईमान के साथ दुन्या से रुख़्सत

येही अ़र्ज़ है आख़िरी ग़ौसे आ'ज़म (क़बालए बख़्शिश)

चोर वहीं आता है जहां माल हो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई शैत़ान बड़ा मक्कार व अ़य्यार है, वोह त़रह़ त़रह़ के शो'बदे या'नी जादूई करतब भी दिखाता है, इस के वार से हमेशा ख़बरदार रहना चाहिये, अपनी अ़क़्ल व होशियारी

पर ए'तिमाद करने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम पर नज़र रखनी चाहिये। जिस के पास माल होता है उस के पास चोर आता है और जिस के पास दौलते ईमान है उस के पास ईमान का लुटेरा शैत़ान ज़रूर आता है नीज़ जिस के पास ईमान जितना मज़्बूत़ होगा उस के पास उसी क़दर नेकियों के ख़ज़ाने की भी कसरत होगी लिहाज़ा वहां शैत़ान बहुत ज़ियादा ज़ोर लगाएगा। हमारे पीरो मुर्शिद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के पास ईमान व आ'माल के ख़ज़ाने के अम्बार को देख कर शैत़ान ने डाके डालने की **मु-तअ़द्दद** बार कोशिश की मगर वोह नाकाम व ना मुराद ही रहा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ शैत़ान के मज़ीद ह़म्ले

पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, क़ुत़्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, पीरे ला सानी, ग़ौसुस्स-मदानी, पीरे पीरां, मीरे मीरां, अश्शैख़ सय्यिद अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي त़ह़दीसे ने'मत और अहले **मह़ब्बत** की नसीह़त के लिये फ़रमाते हैं : मैं जिन दिनों शबो रोज़ जंगल में रहा करता था, शयात़ीन ख़ौफ़नाक शक्लों में फ़ौज दर फ़ौज त़रह़ त़रह़ के हथियारों से लैस हो कर मुझ पर ह़म्ला आवर होते, मुझ पर आग बरसाते, मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद से उन के पीछे दौड़ता तो वोह **मुन्तशिर** हो कर भाग जाते, कभी कोई शैत़ान अकेला आ कर मुझे त़रह़ त़रह़ से डराता, धमकाता और

कहता यहां से चले जाओ । मैं उस को ज़ोरदार त़मांचा मार देता तो वोह भागने लगता, फिर मैं لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم पढ़ता तो वोह जल जाता । (ऐज़न, स. 165)

दिल पे कन्दा हो तेरा नाम कि वोह दुज़्दे रजीम[1]

उलटे ही पाउं फिरे देख के तुग़रा तेरा (ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ ग़ैबी हाथ

ह़ुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : एक बार **निहायत ख़ौफ़नाक सूरत** वाला एक शख़्स जिस से बदबू के भब्के उठ रहे थे आ कर मेरे सामने खड़ा हो गया और कहने लगा : मैं **इब्लीस** हूं और आप की ख़िदमत करने के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं क्यूं कि आप ने मुझे और मेरे चेलों को थका दिया है । मैं ने कहा : दफ़्अ़ हो । उस ने इन्कार किया । इतने में ग़ैब से एक हाथ नुमूदार हुवा जिस ने उस के सर पर ऐसी ज़ोरदार ज़र्ब लगाई कि वोह ज़मीन में धंस गया मगर फिर उस ने **आग का शो'ला** हाथ में ले कर मुझ पर ह़म्ला कर दिया । इतने में एक निक़ाब पोश साह़िब **घोड़े** पर सुवार तशरीफ़ लाए और उन्हों ने मुझे **तलवार** दी । येह देख कर शैत़ान भाग खड़ा हुवा । (بَهْجَةُ الْاَسْرار ص١٦٦)

बादलों से कहीं रुकती है कड़क्ती बिजली

ढालें छंट जाती हैं उठता है जो तैग़ा तेरा (ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 : धुत्कारा हुवा चोर या'नी मरदूद शैत़ान ।

﴾6﴿ शैत़ान के जाल

सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने देखा कि **शैत़ान** दूर बैठा अपने सर पर ख़ाक उड़ा रहा है और रोते हुए कह रहा है : "ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! मैं आप से मायूस हो गया हूं।" मैं ने कहा : ऐ मल्ऊ़न ! दफ़्अ़ हो, मैं तुझ से कभी भी बे ख़ौफ़ नहीं हो सकता। वोह बोला : आप की येह बात मेरे लिये सब से ज़ियादा गिरां (या'नी सख़्त) है। इस के बा'द उस ने मुझ पर बहुत सारे जाल, फन्दे और ह़ीले ज़ाहिर किये और मेरे इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर बताया कि येह **दुन्या के जाल** हैं जिन से मैं आप जैसों का शिकार किया करता हूं। मैं एक साल तक जिद्दो जुहद करता रहा, यहां तक कि वोह सारे जाल टूट गए। फिर मेरे इर्द गिर्द बहुत सारे अस्बाब ज़ाहिर हुए। मैं ने पूछा : येह क्या हैं ? तो कहा गया कि येह आप से **मु-तअ़ल्लिक़** मख़्लूक़ के अस्बाब (या'नी मख़्लूक़ की **मह़ब्बतें** वग़ैरा) हैं। चुनान्चे इस मुआ़-मले में भी मैं ने मज़ीद एक साल तवज्जोह (जिद्दो जुहद) की ह़त्ता कि वोह जाल भी सब के सब टूट गए।

(بَهْجَةُ الْاَسْرار ص١٦٦)

जिस को ललकार दे आता हो तो उलटा फिर जाए
जिस को चुमकार ले हिर फिर के वोह तेरा तेरा (ह़दाइक़े बख़्शिश)

सुधरने की कोशिश तर्क नहीं करनी चाहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई नफ़्सो शैत़ान से पीछा

छुड़ाना आसान नहीं । हमारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने इस से नजात पाने के लिये सालहा साल तक जिद्दो जुहद फ़रमाई यहां उन लोगों के लिये बड़ा दर्से इब्रत है जो बहुत जल्द हिम्मत हार जाते और बोल पड़ते हैं कि हम ने तो बड़े जतन किये, काफ़ी अ़र्सा म-दनी माहोल में आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत इख़्तियार की, म-दनी क़ाफ़िलों में भी सफ़र किये मगर नफ़्सो शैत़ान से जान न छूटी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखते हुए इस्लाह़ के लिये उ़म्र भर कोशिश जारी रखनी चाहिये ।

तू कुव्वत दे मैं तन्हा काम बिस्यार

बदन कमज़ोर दिल काहिल है या ग़ौस (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ सर्द रात में चालीस40 बार ग़ुस्ल

''**बह़जतुल असरार शरीफ़**'' में है, सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ''कर्ख़'' के जंगलों में बरसों रहा हूं, दरख़्त के पत्तों और बूटियों पर मेरा गुज़ारा होता । मुझे पहनने के लिये हर साल एक शख़्स सूफ़ (या'नी ऊन) का एक जुब्बा ला कर देता था जिस को मैं पहना करता था । मैं ने दुन्या की **मह़ब्बत** से नजात ह़ासिल करने के लिये हज़ार जतन किये, मैं **गुमनाम** रहा, मेरी ख़ामोशी के सबब लोग मुझे गूंगा, नादान और दीवाना कहते थे, मैं कांटों पर नंगे पाउं चलता था, ख़ौफ़नाक ग़ारों और भयानक वादियों में बे झिजक दाख़िल हो जाता । दुन्या बन संवर कर मेरे सामने ज़ाहिर होती मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं उस की

त़रफ़ इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) न करता। मेरा नफ़्स कभी मेरे आगे आ़जिज़ी करता कि आप की जो मरज़ी होगी वोही करूंगा और कभी मुझ से लड़ता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उस पर फ़त्ह़ नसीब करता। मैं मुद्दतों "मदाइन" के बियाबानों में रहा और अपने नफ़्स को मुजा-हदात में लगाता रहा। एक साल तक गिरी पड़ी चीज़ें खाता और बिल्कुल पानी न पीता फिर एक साल सिर्फ़ पानी पर गुज़ारा करता और गिरी पड़ी चीज़ या कोई और ग़िज़ा न खाता फिर एक साल बिग़ैर कुछ खाए पिये फ़ाक़े से गुज़ारता। मुझ पर सख़्त आज़्माइशें आतीं, एक बार सख़्त सर्दी की रात मेरा यूं इम्तिह़ान लिया गया कि बार बार आंख लग जाती और मुझ पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता, मैं फ़ौरन नह्र पर आता और ग़ुस्ल करता इस त़रह़ मैं ने उस **एक रात में चालीस**[40] **बार ग़ुस्ल किया।**

(مُلَخَّص اَز بَهْجَةُ الْاَسْرار لِلشَّطْنُوفی ص ١٦٥)

कहा तूने जो मांगोगे मिलेगा
रज़ा तुझ से तेरा साइल है या ग़ौस

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसीबत दूर होने का अ़मल

ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی "त़बक़ाते कुब्रा" में हुज़ूरे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का येह इर्शादे गिरामी नक़्ल करते हैं : इब्तिदाअन मुझ पर बहुत सख़्तियां रखी गईं, जब सख़्तियां इन्तिहा को पहुंच गईं तो मैं आ़जिज़ आ कर ज़मीन पर लैट गया और मेरी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

ज़बान पर कुरआने पाक की येह दो[2] आयाते मुबा–रका जारी हो गईं :

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ﴿۶﴾

(پ۳۰، الم نشرح:۵-۶)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन आयात की ब–र–कत से वोह तमाम सख़्तियां मुझ से दूर हो गईं। (اَلطّبقاتُ الْکُبری ج ۱ ص۱۷۸ ملخّصاً دار الفکر بیروت)

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा

ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हम भी कोशिश करें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने अपने रब्बे मुअ़ज़्ज़म عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब पाने और अपने नानाजान, रह़मते आ–लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को खुश फ़रमाने, नफ़्सो शैतान पर ग़ालिब आने, दुन्या की **मह़ब्बत** से पीछा छुड़ाने, गुनाहों के अमराज़ से खुद को बचाने, मख़्लूक़े खुदा عَزَّوَجَلَّ को राहे रास्त पर लाने, मुबल्लिग़ का शरफ़ पाने, नेकी की दा'वत की दुन्या में धूम मचाने और बे शुमार कुफ़्फ़ार को दामने इस्लाम में दाख़िल फ़रमाने के लिये सालहा साल तक जिद्दो जुहद फ़रमाई। ख़ैर हम हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रह़ मुजा–हदात तो करने से रहे मगर हिम्मत हारे

बिग़ैर थोड़ी बहुत कोशिश तो जारी रखें ।

सच है इन्सान को कुछ खो के मिला करता है

आप को खो के तुझे पाएगा जोया तेरा (ज़ौक़े ना'त)

﴾8﴿ 25 बरस जंगलों में.....

सरकारे बग़्दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **महब्बत** का दम भरने वाले इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने इबादतों और रियाज़तों में इराक़ के जंगलों में **25 बरस** गुज़ार दिये । काश ! हमें भी तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ातिर गाउं ब गाउं, शहर ब शहर और मुल्क ब मुल्क सफ़र करने वाले **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करना नसीब हो जाए ।

कोई सालिक है या वासिल है या ग़ौस

वोह कुछ भी हो तेरा साइल है या ग़ौस (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ ज़मीन से चुन चुन कर टुकड़े खाना

सरकारे बग़्दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं शहर में खाने के इरादे से गिरे पड़े टुकड़े या जंगल की कोई घास या पत्ती उठाना चाहता और जब देखता कि दूसरे फ़ु-क़रा भी इसी की तलाश में

हैं तो अपने इस्लामी भाइयों पर **ईसार** करते हुए न उठाता बल्कि यूंही छोड़ देता ताकि वोह उठा कर ले जाएं और ख़ुद **भूका** रहता । जब भूक के सबब कमज़ोरी ह़द से बढ़ी और क़रीबुल मौत हो गया तो मैं ने **फूल वाले बाज़ार** से एक खाने की चीज़ जो ज़मीन पर पड़ी थी उठाई और एक कोने में जा कर उसे खाने के लिये बैठ गया । इतने में एक अ़-जमी नौ जवान आया, उस के पास **ताज़ा रोटियां और भुना हुवा गोश्त** था वोह बैठ कर खाने लगा, उस को देख कर मेरी खाने की ख़्वाहिश एक दम शिद्दत इख़्तियार कर गई, जब वोह अपने खाने के लिये लुक़्मा उठाता तो भूक की बेताबी की वजह से बे इख़्तियार जी चाहता कि मैं मुंह खोल दूं ताकि वोह मेरे मुंह में लुक़्मा डाल दे । आख़िर मैं ने अपने नफ़्स को डांटा कि "बे सब्री मत कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे साथ है, चाहे मौत आ जाए मगर मैं इस नौ जवान से मांग कर हरगिज़ नहीं खाऊंगा ।"

यकायक वोह नौ जवान मेरी त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हुवा और कहने लगा : भाई ! आ जाइये आप भी खाने में शरीक हो जाइये ! मैं ने इन्कार किया, उस ने इस्रार किया, मेरे नफ़्स ने मुझे खाने के लिये बहुत उभारा लेकिन मैं ने फिर भी इन्कार ही किया मगर उस नौ जवान के पैहम इस्रार पर मैं ने थोड़ा सा खाना खा लिया, उस ने मुझ से पूछा : आप कहां के रहने वाले हैं ? मैं ने कहा : **जीलान** का । वोह बोला : मैं भी **जीलान** ही का हूं । अच्छा येह बताइये आप मश्हूर ज़ाहिद ह़ज़रते सय्यिद अबू **अ़ब्दुल्लाह** सौ-मई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के नवासे अ़ब्दुल क़ादिर को जानते

हैं ? मैं ने कहा : वोह तो मैं ही हूं। येह सुन कर वोह बे क़रार हो गया और कहने लगा कि मैं **बग़दाद** आने लगा तो आप की अम्मीजान ने आप को देने के लिये मुझे **8** सोने की अशरफ़ियां दी थीं, मैं यहां **बग़दाद** आ कर तलाशता रहा मगर आप का किसी ने पता न दिया यहां तक कि मेरी अपनी तमाम रक़म ख़र्च हो गई, तीन दिन तक मुझे खाने को कुछ न मिला, मैं जब भूक से निढाल हो गया और मेरी जान पर बन गई तो मैं ने आप की **अमानत** में से येह रोटियां और भुना हुवा गोश्त ख़रीदा। हुज़ूर ! आप भी बख़ुशी इसे तनावुल फ़रमाइये कि येह आप ही का माल है पहले आप मेरे मेहमान थे और अब मैं आप का मेहमान हूं, बक़िय्या रक़म पेश करते हुए बोला : मैं मुआ़फ़ी का त़लब गार हूं, मैं ने इज़्त़रारी ह़ालत में आप की रक़म ही से खाना ख़रीदा था। मैं बहुत ख़ुश हुवा। मैं ने बचा हुवा खाना और मज़ीद कुछ रक़म उस को पेश की, उस ने क़बूल की और चला गया। (الذّیل علی طبقات الحنابلة ج۳ ص۲۵۰ دارالکتب العلمیة بیروت)

त़लब का मुंह तो किस क़ाबिल है या ग़ौस
मगर तेरा करम कामिल है या ग़ौस (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

ईसार की अ़ज़ीम फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में हमारे लिये इ़ब्रत के बे शुमार **म-दनी फूल** हैं, देखिये तो सही ! एक त़रफ़ हमारे पीरो मुर्शिद ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं कि आप ने सख़्त तंगदस्ती और फ़ाक़ा मस्ती के बा वुजूद ग़िज़ा और रक़म के मुआ़-मले

में बे मिसाल **ईसार** से काम लिया जब कि दूसरी त़रफ़ ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की अ़क़ीदत का दम भरने वाले ना लाइक़ मुरीद हैं कि भूके रहने की तौफ़ीक़ तो दूर रही, बिलफ़र्ज़ ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ की बिरयानी ही सामने आ जाए तो ह़िर्स का ऐसा ग़-लबा त़ारी हो जाए कि जी चाहे बस सारे का साल थाल मैं ही खा डालूं, बोटी तो कुजा किसी को चावल का एक दाना भी न जाने पाए ! **ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म !** आप को जब कभी दूसरों के साथ मिल कर खाने का इत्तिफ़ाक़ हो, बड़े बड़े निवाले बिग़ैर चबाए जल्द जल्द निगलने और उ़म्दा बोटियां अपनी त़रफ़ सरका लेने की ह़िर्स ग़ालिब आए उस वक़्त अपने पीरो मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बयान कर्दा **ह़िकायत** के साथ साथ येह **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी ज़ेह्न में दोहरा लीजिये : **''जो शख़्स उस चीज़ को जिस की ख़ुद इसे ह़ाजत हो दूसरे को दे दे तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **इसे बख़्श देता है ।''** (اِتحافُ السّادَة للزّبيدی ج۹ ص ۷۷۹) नीज़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 482 पर मरक़ूम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان का इ़नायत फ़रमूदा येह **म-दनी फूल** भी क़बूल फ़रमा लीजिये : **''नफ़्स की किसी ख़्वाहिश को छोड़ देना 12 माह के रोज़ों और रात की इ़बादतों से भी बढ़ कर दिल के लिये नफ़्अ़ बख़्श है ।''** (اِحیاءُ العلوم ج۳ ص ۱۱۸ دارصادر بیروت)

मेरी ह़िर्स की आ़दते बद मिटा दे
मेरे ग़ौस का वासित़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ नींद उड़ाने का अ़जीब नुस्ख़ा

सरकारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم तह़्दीसे ने'मत और अपने ग़ुलामों की नसीह़त के लिये फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं पच्चीस[25] साल तक इ़राक़ के वीरानों में फिरता रहा और चालीस[40] साल तक इ़शा की नमाज़ के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा की । पन्दरह[15] साल तक रोज़ाना बा'दे नमाज़े इ़शा नवाफ़िल में एक क़ुरआने पाक ख़त्म करता रहा । इब्तिदा में अपने बदन पर रस्सी बांध कर उस का दूसरा सिरा दीवार में गड़ी हुई खूंटी से बांध दिया करता था ताकि अगर नींद का ग़-लबा हो तो इस के झटके से आंख खुल जाए। (بَهْجَةُ الْاَسْرار ص۱۱۸)

एक रात जब मैं ने अपने मा'मूलात का क़स्द किया तो नफ़्स ने सुस्ती करते हुए थोड़ी देर सो जाने और बा'द में उठ कर इ़बादत बजा लाने का मश्वरा दिया, जिस जगह दिल में येह ख़याल आया था उसी जगह और उसी वक़्त एक क़दम पर खड़े हो कर मैं ने एक क़ुरआने करीम ख़त्म किया । (بَهْجَةُ الْقَادِرِيه)

गिराने लगी है हमें लग़्ज़िशे पा
संभालो ! ज़ईफ़ों को या ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم **की मह़ब्बत का दम भरने**

वालो ! देखा आप ने ! सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه किस क़दर इबादत का एहतिमाम फ़रमाते थे अब अगर हम से **مَعَاذَاللّٰه** عَزَّوَجَلَّ पांच वक़्त की नमाज़ भी न पढ़ी जाए तो हम किस क़िस्म के आ़शिक़ाने ग़ौसुल आ'ज़म हैं ?

मुझे अपनी उल्फ़त में ऐसा गुमा दे
न पाऊं फिर अपना पता ग़ौसे आ'ज़म (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ साहिबे क़ब्र की इमदाद

पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي बरोज़ बुध 27 **ज़ुल हिज्जतिल ह़राम** सि. 529 हि. को **''शूनीज़िया''** के क़ब्रिस्तान में अपने उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ ह़म्माद عليهِ رَحْمَةُاللهِ الجَوَاد के मज़ार शरीफ़ पर उ़-लमा व फ़ु-क़रा के क़ाफ़िले के हमराह तशरीफ़ ले आए और काफ़ी देर तक खड़े खड़े दुआ़ फ़रमाते रहे यहां तक कि धूप बहुत तेज़ हो गई। जब लौटे तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के चेहरए अन्वर पर बशाशत के आसार थे। जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस क़दर त़वील दुआ़ का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : 15 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** सि. 499 हि. बरोज़ जुमुआ़ नमाज़े जुमुआ़ अदा करने के लिये इस मज़ार शरीफ़ में आराम फ़रमाने वाले मेरे उस्ताज़े गिरामी सय्यिदुना **शैख़ ह़म्माद** عليهِ رَحْمَةُاللهِ الجَوَاد के साथ एक क़ाफ़िला जानिबे ''जामिउ़र्रुसाफ़ह'' रवां दवां था। रास्ते में

जब एक नह्र के पुल पर से गुज़रे तो **शैख़ ह़म्माद** عليهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد ने अचानक मुझे धक्का दे कर नह्र में गिरा दिया, सख़्त सर्दियों के दिन थे, मैं ने **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर ग़ुस्ले जुमुआ़ की निय्यत कर ली, जूं तूं पानी से निकला और अपना सूफ़ (या'नी ऊन) का जुब्बा निचोड़ा और क़ाफ़िले से जा मिला । **शैख़ ह़म्माद** عليهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد के मुरीद ख़ुश त़बई करने लगे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें डांटा और फ़रमाया : मैं ने **अ़ब्दुल क़ादिर** का इम्तिह़ान लिया जिस में इन को पहाड़ की त़रह़ **मुस्तह़कम** पाया । ह़ुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने मज़ीद फ़रमाया कि मैं ने अपने उस्ताज़ सय्यिदुना **शैख़ ह़म्माद** عليهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد को उन के मज़ारे पुर अन्वार में हीरे और जवाहिरात के लिबास में मल्बूस सर पर **याक़ूत का ताज** पहने, हाथों में सोने के कंगन और पाउं में सोने के ना'लैने शरीफ़ैन में मुला-ह़ज़ा किया, मगर **तअ़ज्जुब** ख़ैज़ बात जो देखी वोह येह थी कि उन का **दायां** (या'नी सीधा) **हाथ** काम नहीं कर रहा था ! मेरे इस्तिफ़्सार पर बताया : ''येह वोही हाथ है जिस से मैं ने आप को नह्र में धकेला था, क्या आप मुझे मुआ़फ़ करते हैं ?'' जब मैं ने मुआ़फ़ कर दिया तो उन्हों ने कहा कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ फ़रमा दीजिये कि मेरा **दायां हाथ** दुरुस्त हो जाए । लिहाज़ा मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगता रहा और **पांच हज़ार अस्ह़ाबे मज़ार औलियाउल ग़फ़्फ़ार** अपने अपने मज़ार में **आमीन** कहते और मेरी सिफ़ारिश करते रहे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन का **दायां हाथ** दुरुस्त फ़रमा दिया जिस से उन्हों ने ख़ुश हो कर मुझ से मुसा-फ़ह़ा किया ।

बग़दादे मुअ़ल्ला में येह ख़बर जब मश्हूर हुई तो सय्यिदुना **शैख़**

ह़म्माद عليهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد के बा'ज़ मुरीदीन पर शाक़ गुज़रा और वोह तस्दीक़ के लिये **दरबारे ग़ौसिया** में ह़ाज़िर हुए मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की हैबत के सबब किसी को पूछने की हिम्मत न हुई । पीरों के पीर, रोशन ज़मीर, हुज़ूरे ग़ौसुल आ'ज़म दस्त गीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَدِيْر ने उन लोगों के दिलों का ह़ाल जान लिया और ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया : आप ह़ज़रात दो[2] शैख़ पसन्द कर लें जो आप का येह मस्अला ह़ल करें। चुनान्चे येह मुआ़-मला ह़ज़रते **सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ हमदानी** और ह़ज़रते **सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुर्रह़मान कुर्दी** رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰى जो कि अस्ह़ाबे कश्फ़ थे उन्हें सोंप दिया गया और हुज़ूरे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ख़िदमत में अ़र्ज़ कर दी गई कि हम आप को जुमुआ़ तक मोहलत देते हैं कि येह दोनों[2] ह़ज़रात आप की तस्दीक़ कर दें । ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप ह़ज़रात यहां से उठने भी न पाएंगे कि मस्अला ह़ल हो जाएगा । येह फ़रमा कर हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने सरे अन्वर झुका लिया । तमाम ह़ाज़िरीन ने भी अपना सर झुका लिया । इतने में ह़ज़रते **सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ हमदानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي पा बरह्ना (या'नी नंगे पाउं) जल्दी जल्दी तशरीफ़ लाए और ए'लान किया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से अभी अभी मुझ पर शैख़ ह़म्माद عليهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد ज़ाहिर हुए और हुक्म दिया कि फ़ौरन **शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی के मद्रसे में जा कर सब को बता दो : "शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने आप ह़ज़रात को मेरे बारे में जो कुछ बताया है वोह सच है।" इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना **शैख़ अ़ब्दुर्रह़मान कुर्दी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی भी आ गए और उन्हों ने भी ह़ज़रते

सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ हमदानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی की त़रह़ ही कहा। इस पर तमाम ह़ज़रात ने हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से **मुआ़फ़ी** मांगी।

(بَهْجَةُ الْاَسْرار ص۱۰۷)

जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत में हमारे लिये ह़िक्मत के बे शुमार **म-दनी फूल** हैं। **मिन जुम्ला** येह कि इस्लामी उस्ताज़ या पीरो मुर्शिद की त़रफ़ से कभी कोई ऐसा मुआ़-मला पेश आ जाए जो समझ में न आता हो तो उस पर **सब्रो तह़म्मुल** का दामन थामे रहे न कि अपने उस्ताज़ या पीर की मुख़ा-लफ़त कर के अपनी आख़िरत दाव पर लगा दे जैसा कि हमारे **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के **उस्ताज़े गिरामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی ने उन्हें सख़्त सर्दी में नह्र में गिरा दिया फिर भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **सब्र** के साथ साथ **ग़ुस्ले जुमुआ़** की निय्यत भी फ़रमा ली और ज़बान पर ह़र्फ़े शिकायत न लाए।

पीर पर ए'तिराज़ बाइ़से बरबादी है

यक़ीनन जो दीनी त़ालिबे इ़ल्म अपने इस्लामी उस्ताज़ पर और जो मुरीद अपने पीरो मुर्शिद पर ए'तिराज़ करता है वोह फ़ैज़ाने इ़ल्मो मा'रिफ़त से मह़रूम रहता बल्कि हलाकत के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में जा पड़ता है। चुनान्चे **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये**

सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان नक़्ल फ़रमाते हैं : ''पीरों पर ए'तिराज़ से बचे कि येह मुरीदों के लिये ज़हरे क़ातिल है, कम कोई मुरीद होगा जो अपने शैख़ पर ए'तिराज़ करे फिर फ़लाह़ (या'नी काम्याबी) पाए, शैख़ के तसर्रुफ़ात से जो कुछ इसे सह़ीह़ मा'लूम न होते हों उन में ख़िज़्र عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त याद कर ले क्यूं कि उन से वोह बातें सादिर होती थीं, ब ज़ाहिर जिन पर सख़्त ए'तिराज़ था (जैसे मिस्कीनों की किश्ती में सूराख़ कर देना, बे गुनाह बच्चे को क़त्ल कर देना) फिर जब वोह इस की वजह बताते थे ज़ाहिर हो जाता था कि ह़क़ येही था, जो उन्हों ने कहा, यूं ही मुरीद को यक़ीन रखना चाहिये कि शैख़ का जो फ़े'ल मुझे सह़ीह़ मा'लूम नहीं होता, शैख़ के पास उस की सिह़्ह़त पर दलीले क़त़ई है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिल क़ुशैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ''रिसालए क़ुशैरिया'' में फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सु-लमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को फ़रमाते सुना, उन से उन के शैख़ ह़ज़रते अबू सह़ल सा'लूकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जो अपने पीर से किसी बात में ''क्यूं!'' कहेगा कभी फ़लाह़ न पाएगा। [رسالہ قشیریہ ص ۳۶۲]

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 510 ता 511)

पीरे कामिल और पीरे नाक़िस

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुबारक फ़तवा सिर्फ़ जामेए शराइत़ पीर या'नी पीरे कामिल के बारे में है। जो पीर नबिय्ये करीम का गुस्ताख़ हो वोह मुरतद

है और जो किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तौहीन करता हो वोह गुमराह व बद मज़्हब है ऐसों का मुरीद बनना ना जाइज़ व गुनाह है नीज़ जो पीर खुल्लम खुल्ला गुनाहे कबीरा का मुर-तकिब हो या गुनाहे सग़ीरा पर इस्रार करने वाला हो वोह **फ़ासिक़े मो'लिन** कहलाता है । म-सलन अ़लल ए'लान नमाज़ें क़ज़ा करता हो, नशा करता हो, गन्दी गालियां बकता हो, बे पर्दा ख़्वातीन के हुजूम में बैठता हो, औ़रतों से हाथ चुमवाता या पाउं दबवाता हो, अ़लानिया फ़िल्में डिरामे देखता हो, दाढ़ी मुंडाता या एक मुठ्ठी से घटाता हो वोह **फ़ासिक़े मो'लिन** है, ऐसे पीर की बैअ़त जाइज़ नहीं । देखभाल कर मुरीद बनना चाहिये । चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 278 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : पीरी के लिये चार[4] शर्तें हैं, क़ब्ल अज़ बैअ़त उन का लिह़ाज़ फ़र्ज़ है : ﴿1﴾ सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो ﴿2﴾ इतना इ़ल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरिय्यात के मसाइल किताबों से निकाल सके ﴿3﴾ फ़ासिक़े मो'लिन न हो ﴿4﴾ उस का सिल्सिला नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल (या'नी मिला हुवा) हो । (बहारे शरीअ़त, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 603) अगर किसी पीर के अन्दर इन चारों में से एक भी शर्त़ कम हो तो उस का मुरीद बनना जाइज़ नहीं । अगर ला इ़ल्मी में किसी ने ऐसे पीर से बैअ़त कर ली हो जिस में कोई शर्त़ कम हो तो उस की बैअ़त तोड़ देना ज़रूरी है, इस के लिये "पीरे नाक़िस" को ख़बर देने की ह़ाजत नहीं, इतना कह देना ही काफ़ी है कि मैं फ़ुलां से बैअ़त तोड़ता हूं, बल्कि पीर से ए'तिक़ाद उठ जाने की सूरत में ख़ुद

ही बैअ़त टूट जाती है। अब किसी भी जामेए़ शराइत़ पीर से बैअ़त कर सकता है और इस **पीरे कामिल** को बताने की ह़ाजत नहीं कि मैं फ़ुलां की बैअ़त तोड़ कर आप का मुरीद हुवा हूं।

कामिल पीर की बैअ़त तोड़ने के नुक़्सानात

बिला वज्हे शर-ई **पीरे कामिल**, जामेए़ शराइत़ की बैअ़त तोड़ना अज़ रूए त़रीक़त सख़्त महरूमी और अज़ रूए शरीअ़त भी सख़्त मम्नूअ़ है। इस बारे में त़रीक़त की किताबों में औलियाए किराम के बीसियों अक़्वाल देखे जा सकते हैं। शरीअ़त में मम्नूअ़ होने की वजह येह है कि शरअ़न एह़सान का बदला कम अज़ कम शुक्रिया अदा करना है। पीरे कामिल का मुरीद होने से आदमी को औलियाए किराम के सिल्सिले के साथ निस्बत ह़ासिल हो जाती है नीज़ फ़ैज़ का एक सिल्सिला जारी होता है और राहे त़रीक़त की बहुत सी मुश्किलात ह़ल होती हैं और बसा अवक़ात तो ज़िन्दगी में एक म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है, इन सब चीज़ों के मुक़ाबले में शुक्रिया अदा करने के बजाए बैअ़त ही तोड़ देना यक़ीनन सख़्त ना शुक्री है और ना शुक्री शरअ़न मम्नूअ़ है चुनान्चे ह़दीस में फ़रमाया गया : مَنْ لَّمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللّٰهَ जिस ने लोगों का शुक्र अदा नहीं किया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र भी अदा नहीं किया। (تِرمِذی ج۳ ص۳۸٤ حدیث ۱۹٦۲) नीज़ जब एक मरतबा आदमी किसी पीरे कामिल की बैअ़त हो जाता है तो फ़ैज़ का सिल्सिला शुरूअ़ हो जाता है अगर्चे मुरीदे नाक़िस को वोह नज़र न आए। तो जब फ़ैज़ का सिल्सिला शुरूअ़ हो चुका तो उसे बर क़रार रखना चाहिये क्यूं कि ह़दीसे मुबारक में है कि مَنْ رُّزِقَ فِیْ شَیْءٍ فَلْيَلْزَمْهُ या'नी जिस को किसी शै से रिज़्क़ मिले

वोह उसे लाज़िम पकड़ ले । (شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص۸۹ حدیث۱۲٤۱) लिहाज़ा जब एक जगह से फ़ैज़ मिल रहा है तो उसे लाज़िम पकड़ना चाहिये । येह बात भी याद रखने के क़ाबिल है कि फ़ी ज़माना जब कोई किसी की बैअ़त तोड़ता है तो दो चीज़ें आ़म सी हैं बल्कि एक तीसरी चीज़ भी । पहली दो चीज़ें तो येह हैं कि बैअ़त तोड़ने वाला अपने साबिक़ा पीर को ह़क़ीर समझते हुए बैअ़त तोड़ता है और मुसल्मान और ख़ुसूसन पीरे कामिल को ह़क़ीर समझना ह़राम और सख़्त मोहलिक या'नी हलाकत में डालने वाला है । दूसरी बात कि उ़मूमन बैअ़त तोड़ने वाले बिल क़स्द (या'नी जान बूझ कर) पीर को ईज़ा पहुंचाते हैं और येह दूसरा ह़राम है कि मुसल्मान को ईज़ा देना ह़राम है । तीसरी चीज़ येह है कि उ़मूमन बैअ़त तोड़ने वाले साबिक़ा पीर की ग़ीबत और उस के बारे में बद गुमानी का शिकार होते हैं और यूं गुनाहों का सिल्सिला दराज़ से दराज़ तर होता चला जाता है । बहर ह़ाल आ़फ़िय्यत व नजात इसी में है कि जब एक दर को मज़्बूती से थाम ले तो उसे थामे रखे और बिला वजह आवारा गर्दी और परेशान नज़री का शिकार न हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ादिरिय्यों के लिये बिशारत के बग़दादी फूल

"**बह्जतुल असरार**" में है : पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, क़ुत्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, पीरे ला सानी, क़िन्दीले नूरानी, शहबाज़े ला मकानी, अश्शैख़ अबू मुह़म्मद सय्यिद **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی का फ़रमाने बिशारत निशान है : मुझे एक बहुत बड़ा रजिस्टर दिया गया जिस में मेरे मुसाह़िबों और मेरे क़ियामत तक

होने वाले मुरीदों के नाम दर्ज थे और कहा गया कि येह सारे अफ़्राद तुम्हारे ह़वाले कर दिये गए हैं। फ़रमाते हैं : मैं ने दारोग़ए जहन्नम से इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) : क्या जहन्नम में मेरा कोई मुरीद भी है ? उन्हों जवाब दिया : "नहीं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मज़ीद फ़रमाया : मुझे अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मेरा दस्ते ह़िमायत मेरे मुरीद पर इस त़रह़ है जिस त़रह़ आस्मान ज़मीन पर साया कुनां है। अगर मेरा मुरीद अच्छा न भी हो तो क्या हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं तो अच्छा हूं, मुझे अपने पालने वाले की इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं उस वक़्त तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से न हटूंगा जब तक अपने एक एक मुरीद को दाख़िले जन्नत न करवा लूं।

(بَهْجَةُ الْاَسْرار لِلشَّطْنُوفی ص۱۹۳)

सरकारे बग़दाद ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों और मेरे दोस्तों को जन्नत में दाख़िल करेगा तो जो कोई अपने आप को मेरा मुरीद कहे मैं उसे क़बूल कर के अपने मुरीदों में शामिल कर लेता हूं और उस की त़रफ़ अपनी तवज्जोह रखता हूं। मैं ने मुन्कर नकीर से इस बात का अ़ह्द लिया है कि वोह **क़ब्र** में मेरे मुरीदों को नहीं डराएंगे।

(مُلَخَّص از بَهْجَةُ الْاَسْرار ص۱۹۳)

सुना ला तख़्फ़ तेरा फ़रमाने आ़ली !
ग़ुलामों की ढारस बंधी ग़ौसे आ'ज़म (क़बालए बख़्शिश)

"या ग़ौसे आ'ज़म निगाहे करम" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से मुर्शिद के 16 हुक़ूक़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुर्शिद के हुक़ूक़ मुरीद पर शुमार से (भी) अफ़्ज़ूं (या'नी बढ़ कर) हैं, ख़ुलासा येह है कि (मुरीद) ﴾1﴿ इन (या'नी मुर्शिद) के हाथ में "मुर्दा ब दस्ते ज़िन्दा" (या'नी ज़िन्दा के हाथों में मुर्दा की त़रह़) हो कर रहे ﴾2﴿ इन की रिज़ा को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा, इन की नाख़ुशी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाख़ुशी जाने ﴾3﴿ इन्हें अपने ह़क़ में तमाम औलियाए ज़माना से बेहतर समझे ﴾4﴿ अगर कोई ने'मत ब ज़ाहिर दूसरे से मिले तो भी उसे (अपने) मुर्शिद ही की अ़त़ा और इन्हीं की नज़रे तवज्जोह का सदक़ा जाने ﴾5﴿ माल, औलाद, जान,

सब इन पर तसद्दुक़ करने (या'नी लुटाने) को तय्यार रहे ﴾**6**﴿ इन की जो बात अपनी नज़र में ख़िलाफ़े शर-अ़ बल्कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कबीरा (गुनाह) मा'लूम हो उस पर भी न ए'तिराज़ करे, न दिल में बद गुमानी को जगह दे बल्कि यक़ीन जाने कि मेरी समझ की ग़-लती है ﴾**7**﴿ दूसरे को अगर आस्मान पर उड़ता देखे जब भी (अपने) मुर्शिद के सिवा दूसरे के हाथ में हाथ देने को सख़्त आग जाने, एक बाप से दूसरा बाप न बनाए ﴾**8**﴿ इन के हुज़ूर बात न करे ﴾**9**﴿ हंसना तो बड़ी चीज़ है इन के सामने आंख, कान, दिल, हमा तन (या'नी मुकम्मल तौ़र पर) इन्हीं की त़रफ़ मसरूफ़ रखे ﴾**10**﴿ जो वोह पूछें निहायत ही नर्म आवाज़ से ब कमाले अदब बता कर जल्द ख़ामोश हो जाए ﴾**11**﴿ इन के कपड़ों, इन के बैठने की जगह, इन की औलाद, इन के मकान, इन के मह़ल्ले, इन के शहर की ता'ज़ीम करे ﴾**12**﴿ जो वोह हुक्म दें "क्यूं!" न कहे (और बजा लाने में) देर न करे (बल्कि) सब कामों पर उसे तक़्दीम (या'नी अव्वलिय्यत) दे ﴾**13**﴿ इन की ग़ैबत (या'नी ग़ैर मौजू-दगी) में भी इन के बैठने की जगह न बैठे ﴾**14**﴿ इन की मौत के बा'द भी इन की ज़ौजा से निकाह़ न करे

《**15**》 रोज़ाना अगर वोह ज़िन्दा हैं, इन की सलामती व आ़फ़िय्यत की दुआ़ ब कसरत करता रहे और अगर इन्तिक़ाल हो गया तो रोज़ाना इन के नाम पर फ़ातिहा़ व दुरूद का सवाब पहुंचाए 《**16**》 इन के दोस्त का दोस्त, इन के दुश्मन का दुश्मन रहे । ग़रज़ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم के बा'द इन के इ़लाक़े (या'नी तअ़ल्लुक़) को तमाम जहान के इ़लाक़े (या'नी तअ़ल्लुक़) पर दिल से तरजीह़ दे और इसी पर कारबन्द रहे वग़ैरा वग़ैरा । जब येह ऐसा होगा तो हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم व ह़ज़राते मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की मदद ज़िन्दगी में, नज़्अ़ में, **क़ब्र** में, **ह़श्र** में, मीज़ान पर, सिरात़ पर, ह़ौज़ पर हर जगह इस के साथ रहेगी । इस के मुर्शिद अगर ख़ुद कुछ नहीं तो इन के मुर्शिद तो कुछ हैं या मुर्शिद के मुर्शिद यहां तक कि साह़िबे सिल्सिला (क़ादिरिय्या) ह़ुज़ूरे पुरनूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फिर येह (क़ादिरी) सिल्सिला मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تعالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم और उन से सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और उन से **अल्लाह** रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ तक मुसल्सल चला गया है । **हां येह ज़रूर है कि**

मुर्शिद चारों शराइते़ बैअ़त का जामेअ़ हो फिर इन का हुस्ने ए'तिक़ाद सब कुछ फल ला सकता है । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ۔ واللّٰہُ تعالٰی اَعلَم

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 369)

तू है वोह ग़ौस[1] कि हर ग़ौस है शैदा तेरा
तू है वोह ग़ैस कि हर ग़ैस[2] है प्यासा तेरा

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस
में आक़ा का पड़ोस

9 रबीउल गौस 1427 हि.

म-दनी फूल

ऐ काश ! रोज़ी में कसरत की महब्बत से ज़ियादा हम नेकियों में ब-र-कत की ह़सरत करते और इस के लिये भी कोई विर्द करते ।

1 : ग़ौस या'नी फ़रियाद सुनने वाला
2 : ग़ैस या'नी कूंआं

नज़ारा हो दरबार का ग़ौसे आ'ज़म

नज़ारा हो दरबार का ग़ौसे आ'ज़म दिखा नीला गुम्बद दिखा ग़ौसे आ'ज़म

मुझे जामे उल्फ़त पिला ग़ौसे आ'ज़म रहूं मस्तो बेख़ुद सदा ग़ौसे आ'ज़म

करम कीजिये फिर मैं बग़दाद आऊं मेरे पीर का वासिता ग़ौसे आ'ज़म

मुझे अपनी चौखट का कुत्ता बना लो हमेशा रहूं बा वफ़ा ग़ौसे आ'ज़म

तेरे आस्तां का हूं मंगता गुज़ारा है टुकड़ों पे तेरे मेरा ग़ौसे आ'ज़म

गुनाहों का बार अपने सर पर उठा कर फिरूं कब तलक जा ब जा ग़ौसे आ'ज़म

इलाज आख़िर ऐ मुर्शिदी कब करेंगे ! गुनाहों के बीमार का ग़ौसे आ'ज़म

गुनहगार हूं गर अ़ज़ाबों ने घेरा तो होगा मेरा हाए ! क्या ग़ौसे आ'ज़म

नज़र मुर्शिदी तेरी जानिब लगी है अ़ज़ाबों से लेना बचा ग़ौसे आ'ज़म

जहां में जियूं सुन्नतों के मुताबिक़ मदीने में हो ख़ातिमा ग़ौसे आ'ज़म

हो अ़त्तार की बे हिसाब बख़्शिश आक़ा

येह फ़रमाएं हक़ से दुआ ग़ौसे आ'ज़म

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में ***मक-त-बतुल मदीना*** *के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।*